B.A.1 History paper-1
Dr. L.K.V.D. College, Tajpur
Samastipur
L.N.M.U. Darbhanga 1

यूनानी, [मकदुनियाई] आक्रमण

ई० पूर्व चौथी शदी में विश्व पर अपना अधिकार स्थापित करने के लिए यूनानियों और ईरानियों के बीच संघर्ष हुआ।

यूनानियों ने सिकन्दर के नेतृत्व में 331 BC में अरावेला के युद्ध में ईरानियों को पराजित किया।

सिकंदर महान :- सिकंदर मैसिडोनिया के क्षत्रप फिलिप II का पुत्र था। जिसनें 359 BC में मकदुनिया की गद्दी पर बैठा।

सिकंदर का जन्म 356 BC में मकदुनिया में हुआ। वह अपने पिता की मृत्यु के बाद 336 BC में मकदुनिया की गद्दी पर बैठा। काबुल व सिंध के बीच सिकंदरिया नामक नगर की स्थापना की। सिकंदर के गुरु अरस्तु थे। वे (सिकंदर) खैबर दर्रे से होकर भारत आया था। तथा पहला आक्रमण तक्षशिला के राजा आम्भि के विरुद्ध था।

सिकंदर विश्व विजेता की सपना और भारत की धन से काफी ललायित थे।

भारत पर आक्रमण के लिए आंभि (तक्षशिला के राजा), शशिगुप्त और पुष्करावती के शासक संजय ने सिकंदर को सहायता का वचन दिया था।

सिकंदर ने ना सिर्फ ईरानियों को पर जीत दर्ज की बल्कि एशिया माइनर (तुर्की) और ईराक, ईरान पर भी जीत का झंडा लहराया था।

पश्चिमोत्तर भारत की राजनीतिक स्थिति इसकी इस योजना के लिए उपयुक्त थी। यह क्षेत्र अनेक स्वतंत्रों और कबिलाईयों गणराज्यों में बंटा हुआ था, जिन्हें मात्र अपने. अपने क्षेत्र से लगाव था। सिकन्दर ने पाया कि इन राजवाड़ों को एक-एक कर जीतना बहुत आसान है। इन इलाकों में दो सुविख्यात शासक थे-

(i) तक्षशिला के शासक आम्भि
(ii) राजा पोरस, जिसका राज्य झेलम व चिनाब नदियों के बीच में पड़ता था।

ईरान पर विजय के बाद सिकन्दर काबुल (अफगानिस्तान) की ओर बढ़ा, जहाँ से वह खैबर दर्रा पार करते हुए 326 BC में भारत में प्रवेश किया।

Scanned with CamScanner

सिंधु नदी तक पहुँचने मे उसे पाँच महीने लग लगा था।
सिकन्दर के निर्देश पर हिपेस्टीन और परदेशियस ने खैबर दर्रा पार कर सिंधु नदी पर एक विशाल ब्रिज का निर्माण करवायें थे।
सिकंदर खैबर दर्रा पार करते हुए जब सिंधु नदी को पार कर रहे थे उस समय औहिन्द नामक स्थान पर लकड़ी के बने ब्रीज/नाव का प्रयोग किए थे।

राजा अम्भि :- सिकंदर का सर्वप्रथम आक्रमण तक्षशिला पर हुआ, वहाँ के शासक अम्भि ने बिना युद्ध किए आक्रमणकारी सिकंदर के सामने आत्म-समर्पण कर दिया था।

राजा पोरस :- सिकन्दर का दुसरा आक्रमण राजा पोरस से हुआ, जिसका साम्राज्य झेलम और चिनाब नदियों के बीच मे था।
राजा पोरस और सिकंदर के बीच झेलम नदी के किनारे सुप्रसिद्ध 'झेलम या वितस्ता' का युद्ध हुआ। जिसमे पोरस की हार हुई, पर सिकंदर ने पोरस की बहादुरी से प्रभावित होकर, उसके राज्य को वापस कर, मित्रता कर ली।

पोरस के बाद सिकंदर ने ग्लौगनिकाय एवं कठ जातियों को हराया था।
अब सिकंदर पुरब की ओर आगे बढ़ना चहाते थे। जहाँ गंगा नदी के किनारे 'मगध साम्राज्य' के नंद वंश के महान साम्राज्य था, जो सैनिक संगठन, हथियार व आर्थिक स्थिति से काफी मजबूत था।
एरियन नामक इतिहासकार ने लिखा है कि " युद्ध कला में भारत वासी अन्य तत्कालीन जनो से अत्यंत श्रेष्ट होते थे।

सिकंदर की सेना नंद वंश के बारे मे जानने के बाद ब्यास नदी को पार करने से इंकार कर दिया। इसके कुछ महत्वपूर्ण कारण थे :-

(1) सिकंदर की सेना लगातार 10 वर्षो से युद्ध-करते-करते थक गए थे और साथ ही सेना मे बीमारियां हो रहा था।

(ii) अधिक समय से बाहर रहने के बाद वापस घर लौटना चहाता था।

(iii) मगध साम्राज्य की विशाल सेना से भय।